कविता शिक्षण और भाषाई कौशल

प्रतिभा शर्मा

यह कहा तो जाता है कि बच्चों को कविता पसन्द होती है और कक्षा में गीत-कविता होनी ही चाहिए, लेकिन इसके बावजूद कक्षाओं में कविता गाना, कविता गाते हुए झूमना, उसपर बच्चों को बातचीत करने देना, आदि नहीं किया जाता। लेखिका ने अपनी कक्षा 6 में नियमित रूप से कविता पर काम किया। उन्होंने बच्चों को कविता गाने, उसपर झूमने और बातचीत करने की आज़ादी दी। धीरे-धीरे बच्चों से बातचीत करते हुए वे पाठ्यक्रम में वर्णित भाषा शिक्षण के उद्देश्यों को इसमें शामिल करती गईं। इस पूरे काम में उन्होंने पाया कि कविताओं से बच्चे सक्रिय हुए, सीखना-सिखाना आसान हुआ और कक्षा भी व्यवस्थित हो गई। -सं.

कक्षा में शिक्षण के दौरान कभी-कभी बच्चों को देखकर लगता था कि वे सीखने में तल्लीन नहीं हैं। कक्षा-कक्ष की गतिविधि से अगर बच्चे असन्तुष्ट हों, तब तुरन्त ही कुछ रोचक तरीक़ा खोजना अनिवार्य हो जाता है। बच्चे शिक्षण गतिविधि और शिक्षण प्रक्रिया का हिस्सा न बनें तो सीखना कैसे हो? इसी उलझन को सुलझाने की कोशिश में, मैंने एक दिन कक्षा में कविता को जगह दी, जिससे बच्चे शान्त होकर मेरी बात सुन सकें। इस दिन की कक्षा में कविता गायन का उद्देश्य कक्षा को व्यवस्थित और रोचक बनाना मात्र था। सभी कविता वाचन करते आनन्द से झूम रहे थे। कुछ तो बार-बार कविता की पंक्तियाँ दोहराते और साथ-साथ नृत्य भी करने लगते। उन्हें चुप रहने या कक्षा में व्यवस्थित रहने को कहने की ज़रूरत नहीं थी। इस कक्षा से मुझे संकेत मिला कि कक्षा का प्रारम्भ कविता से किया जाए। आनन्द के लिए रोज़ कविता गाकर बच्चे मुझसे और कविताओं से जुड़ने लगे थे। हालाँकि वे पूरी तरह सुर में न थे, पर कविता गायन और हाव-भाव के साथ उसकी प्रस्तुति ने सभी का ध्यान आकृष्ट कर लिया था। यों रोज़ काम करने के ढंग में बदलाव के साथ हँसते-गाते, उछल-कूद करते कक्षा की शुरुआत की जाने लगी।

हाँ, शुरुआत में लक्ष्य कविता का आनन्द लेना ही था, लेकिन फिर कविता के ज़रिए भाषा शिक्षण पर भी काम किया जाने लगा। कक्षा 6 के इन विद्यार्थियों को कविता शिक्षण करवाते समय आनन्द के साथ ही सीखने के इन प्रतिफलों को प्राप्त करने का लक्ष्य मेरे सामने था :

(1) बच्चे कविता को लयबद्ध ढंग से पढ़ सकें;

(2) उनमें सौन्दर्यानुभूति और रचनात्मकता को प्रेरित किया जा सके;

(3) वे कविता पर समझ के साथ चर्चा भी कर सकें;

(4) इस प्रक्रिया में उनके शब्दकोश का विस्तार हो;

(5) उनमें प्रश्न निर्माण और उत्तर कौशल का विकास हो;

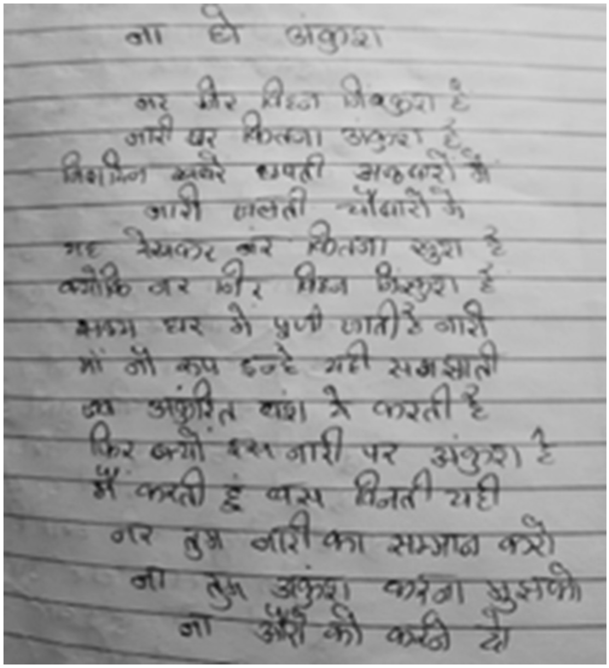
(6) सकारात्मक सोच विकसित हो; और

(7) बच्चों के सोचने-समझने और चिन्तन करने का आधार विकसित हो सके।

शिक्षण के इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर मैंने आगे की योजना बनाई।

शुरू के 2-3 दिन तक सिर्फ़ कविता का आनन्द लेने का ही दौर चला। जब मुझे लगने लगा कि कक्षा में बच्चे पहले से अधिक सक्रिय और व्यवस्थित हैं, हम अपनी योजना के अगले चरणों की तरफ़ बढ़े। अगले दिन मैंने *बचपन एक समंदर* नामक कविता संग्रह से एक कविता का चयन कर कक्षा में इसे एक प्रकरण के रूप में बरतना तय किया। दूसरी कविताओं का चयन पुस्तकालय और कविता कोश से किया गया। कविताएँ ऐसी चुनी गईं जो परिवेशीय समझ, प्रकृति, नैतिक मूल्य, चिन्तन और सरल अन्वेषण पर आधारित हों। मसलन, श्रीनाथ सिंह की ‘इनसे सीखो’, हनुमंत नायडू की ‘नीला अम्बर’, सुलेमान ख़तीब की ‘काटो खेताँ काटो रे’, प्रदीप शुक्ल की ‘गाँव-शहर’, आदि। ये प्रकृति और परिवेश से भावात्मक जुड़ाव बनाने एवं सकारात्मक सोच के साथ चिन्तन करने का आधार देने वाली कविताएँ थीं।

लय-ताल के लिए कक्षा में रखी मेज़ को सुरीले अन्दाज़ में बजाने की कोशिश के साथ कक्षा की शुरुआत तो होने ही लगी थी। अब इन कविताओं पर बच्चों से मौखिक बातचीत करके उनकी समझ, विचार और तर्कों को बाहर लाने की रणनीति बनाई गई। लेकिन अब भी कक्षा में कुछ कमी थी, और वो थी, बच्चों के सीखने के प्रति मेरी जड़ धारणा। हालाँकि, बच्चे अब सवालों के जवाब देने में ज़्यादा उत्साहित नज़र आ रहे थे। मैं अचम्भित थी, क्योंकि मैं यह समझ नहीं पा रही थी कि वे बच्चे, जिनको स्तरानुसार पढ़कर समझने में समय लगता है, जो कक्षा में अपने साथियों को ध्यान से पढ़ने नहीं देते, और जिन्हें मैं शैतान मानती थी, कविता कैसे समझ रहे हैं? आज मेरी सोच से उलट ही हो रहा था। इसीलिए कुछ दिनों बाद कविता में उनकी दिलचस्पी को देखकर मैंने उनके सामने एक शर्त रखी। शर्त यह थी कि कविता से बनी समझ को लिखकर भी दिखाना होगा। सभी बच्चे ख़ुशी-ख़ुशी चिल्लाकर एक साथ ‘हाँ’ बोले। मेरा भी एक काम इससे आसान हुआ। वह यह कि वे ख़ुद से लिखने के लिए भी तैयार हो गए। इस काम के लिए 4-5 दिन बाद का समय निश्चित किया गया। पहले ‘सब बोलें-सब बताएँ’ गतिविधि को अपनाया गया। इसी को आगे लेखन में ले जाने को भी सुनिश्चित किया गया।



काम की शुरुआत

कक्षा 6 में कुल 30 बच्चे थे। इनमें कुछ बच्चे इतने मुखर नहीं थे कि निडर होकर बेहिचक अपनी बात कह सकें। मेरा ध्यान इन्हीं बच्चों

पर केन्द्रित था। मैं बार-बार उनको प्रश्नों के माध्यम से प्रेरित कर रही थी। लेकिन जिन बच्चों में झिझक नहीं थी, वे ही जवाब देने में आगे थे। इसलिए कुछ बच्चों को स्वयंसेवी बनाकर इस ख़ास समूह को अपने साथ मिलाकर बातचीत करने को कहा गया। ये बच्चे ऐसे थे जिन्हें अकेले प्रस्तुति देने और कविता को गाकर प्रस्तुत करने के लिए अपने कुछ साथियों का साथ चाहिए था। इसी अनुभव ने मुझे सभी बच्चों का मिला-जुला समूह बनाने के लिए प्रेरित किया। इनके लिए कक्षा के बाद संगीत शिक्षक से भी बात की गई। तय किया गया कि संगीत के कालांश में सभी बच्चे उन सीखी गई कविताओं का दोहरान करेंगे। कभी-कभार संगीत शिक्षक को हिन्दी कविता कक्षा में भी आमंत्रित किया गया। इस तरह के प्रयासों के बाद बच्चों की झिझक ख़त्म होने लगी और वे समूह के साथ सहज महसूस करने लगे।

बदला-बदला-सा मौसम है
बदले-से लगते हैं सुर ।
दीदा फाड़े शहर देखता
गाँव देखता टुकुर-टुकुर ।

तिल रखने की जगह नहीं है
शहर ठसाठस भरे हुए ।
उधर गाँव में पीपल के हैं
सारे पत्ते झरे हुए ।



मेट्रो के खंभे के नीचे
रात गुजारे परमेसुर ।
दीदा फाड़े शहर देखता
गाँव देखता टुकुर-टुकुर ।

इधर शहर में सारा आलम
आँख खुली बस दौड़ रहा ।
वहाँ रेडियो पर स्टेशन
रामदीन है जोह रहा ।
उनकी बात सुनी है जबसे
दिल करता है धुकुर-पुकुर ।

सुरसतिया के दोनों लड़के
सूरत गए कमाने ।
गेहूँ के खेतों में लेकिन
गिल्ली लगीं घमाने ।



लँगड़ाकर चलती है गैया
सड़कों ने खा डाले खुर ।
दीदा फाड़े शहर देखता
गाँव देखता टुकुर-टुकुर ।

इसका परिणाम आगे चलकर बाल सभा में उनके कविता पाठ के रूप में नज़र आया। अब वे कक्षा में भी कविता को समूह में गाते और अपने सभी साथियों को इस प्रक्रिया में शामिल करते। इसके बाद समूह में उसके अर्थ पर बात करते क्योंकि उन्हें अब कविता पर बनी समझ को समूहवार प्रस्तुत भी करना था। इस बीच मैं हर समूह द्वारा किए जाने वाले प्रयासों पर ध्यान रख रही थी। वे सभी अपने-अपने समूह में कविता के अर्थ के साथ-साथ नवीन शब्दों पर बात करते उनपर मौखिक वाक्य बना रहे थे। जब प्रस्तुतिकरण की प्रक्रिया को बच्चे समझने लगे तब उनसे सम्बन्धित कविता से कुछ प्रश्न बनाने को कहा गया। इसमें कक्षा के सभी स्तर के बच्चों ने भाग लिया। प्रश्नों की प्रकृति में स्तरवार अन्तर था। जहाँ एक समूह कविता के सामान्य अर्थ से जुड़े 'क्या-कब-किसने' जैसे प्रश्न बना रहा था, वहीं अन्य समूह के बच्चे 'क्यों' और 'किसलिए' जैसे प्रश्न बना रहे थे जो तर्क एवं चिन्तन से जुड़े थे।

जैसा कि ऊपर ज़िक्र आया है, आगे की योजना भावार्थ और सार-लेखन से सम्बन्धित थी। अभी हमारी कक्षा में सभी बच्चे भावार्थ और सार-लेखन में सक्षम नहीं थे, इसलिए इन बच्चों के साथ मैं ख़ुद जुड़कर इनकी बातों को चार्ट पेपर पर लिखकर उन्हें पढ़ने को कह रही थी। इनका मैंने एक अलग समूह बनाया था जिसमें लिखने पर काम हो रहा था, लेकिन मात्राओं की समझ को सन्दर्भ के साथ मज़बूत करने का दोहरान भी था। प्रत्येक कविता के अन्त के साथ हमारी ज़िम्मेदारियों पर भी सहज बातचीत को आगे बढ़ाया जाता था। जैसे, अगर किसी कविता में पेड़-पौधों से वस्तुएँ प्राप्त होने की बात है तो बच्चों से इस विषय पर चर्चा हुई कि प्रकृति के प्रति हमारा क्या दायित्व है, हम उसे कैसे पूरा कर सकते हैं, आदि। इन सवालों पर बच्चों के बहुत सटीक जवाब आए। उन्होंने कहा, "जो जितने मकान बनाए, उतने ही पेड़ लगाए।" एक बच्चे ने कहा, "शादी होने पर भी पेड़ लगाएँ तो हम पेड़ों के नुक़सान से बच सकते हैं।" यहाँ हम कविता से सकारात्मक

सोच का विकास करने में सफल होते नज़र आए। साथ ही कविता को सुनने या समझने के बाद उसके अर्थ और भाव को बता पाने और कविता में दिए सन्देश को समझने में भी सक्षम हुए। इसके बाद कुछ नारों की बात चली। बच्चों ने गाँव के आसपास की दीवारों पर लिखे नारों की भी चर्चा की, जिनमें पर्यावरण को बचाने की बात शामिल थी। इसके बाद बच्चों ने 'जल ही जीवन है' के प्रचलित नारे की तर्ज़ पर 'पेड़ है तो कल है' नारा बनाया। इस प्रक्रिया को ये कहकर विराम दिया गया कि अभी सिर्फ़ कविता के अर्थ-भावार्थ को ही समझेंगे। आगे की कक्षाओं में हम विज्ञापन और नारे पर काम करने वाले हैं।

कविता शिक्षण के दौरान हुई चर्चा के कुछ अंश :

प्रदीप शुक्ल की कविता 'बदला-बदला-सा मौसम है, बदले-से लगते हैं सुर' पर बच्चों से कुछ इस तर्ज़ की चर्चा हुई :

सवाल : "अच्छा बताओ, कविता सुनकर क्या समझ आया?"

मनीष : "दीदी, गाँव और शहर के बारे में बताया गया है।"

सवाल : "गाँव-शहर के बारे में क्या बात बताई गई है?"

मोहित : "गाँव में उतनी भीड़ नहीं है जितनी शहर में होती है।"

सवाल : "भीड़ शहर में ज़्यादा क्यों होती है?"

कोमल : "दीदी, गाँव में तो खेती-बाड़ी का ज़्यादा काम है, तो शहर से गाँव में कोई नहीं आता लेकिन शहर में इसका उलटा होता है।"

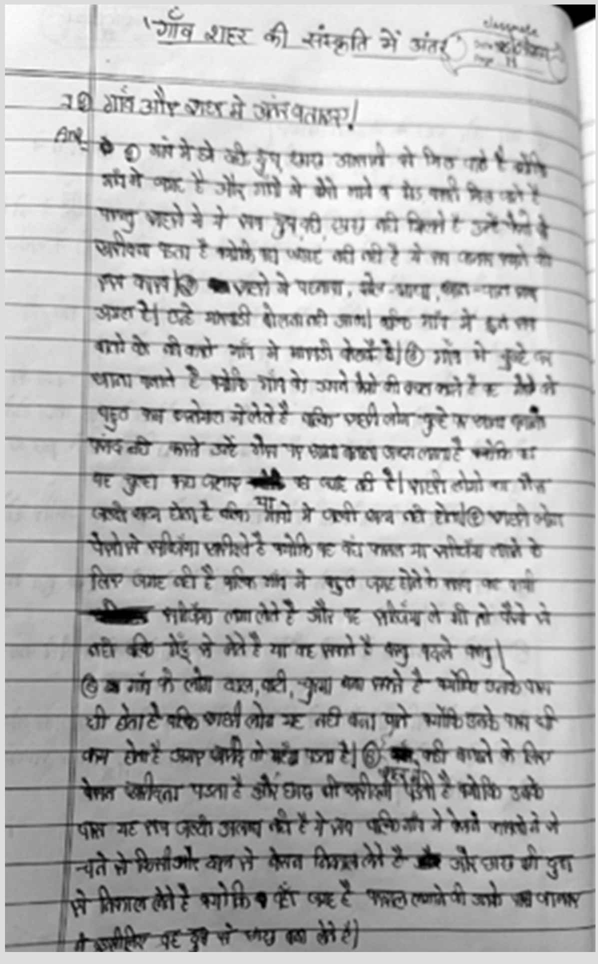
सवाल : "शहर में किस तरह के काम हैं?"

पायल : "शहर में कारख़ाने, बड़ी-बड़ी दुकानें (मॉल, बड़े बाज़ार) हैं जिनमें नौकरी के लिए लोग आते-जाते रहते हैं।"

सवाल : "अब तो आपके गाँव में भी ख़ूब दुकानें खुल गईं, है न?"

पायल : "हाँ दीदी, पर अब भी उतनी चीज़ें नहीं हैं।"

दीदी : "क्या मतलब? मैं समझी नहीं पायल!"



पायल : "दीदी, जैसे हमारे भैया लोग हैं न, उनको आगे पढ़ाई करनी थी तो उनको शहर ही जाना पड़ा। गाँव में पढ़ने की सुविधा नहीं हो पाई।"

दीदी : "अच्छा! इसके अलावा और क्या-क्या अन्तर लगता है आपको?"

धनराज : "दीदी, जैसे कोई ज़्यादा बीमार हो जाता है तो उसको जयपुर ले जाना पड़ता है। नहीं तो बीमारी बढ़ जाती है।"

हिमांशु : "हाँ दीदी, अपने स्कूल का हनुमान बहुत बीमार हो गया था, फिर उसको भी जयपुर ले गए थे फिर वो मर गया।"

दीदी : "जयपुर ही क्यों जाना पड़ता है?"

कोमल : "क्योंकि जयपुर शहर बड़ा है और वहाँ हर तरह की सुविधा ज़्यादा है न, इसलिए!"

सवाल : "गाँव व शहर में और किस तरह के परिवर्तन देखने को मिलते हैं?

कमलेश : "दीदी, बस, कारें, टैक्सी भी ज़्यादा हैं और कमाने के लिए मौक़े भी हैं।"

दीदी : "अच्छा, यानी यातायात के साधन भी कह सकते हैं...?"

एक साथ सभी : "हाँ दीदी, कह सकते हैं।"

दीदी : "अच्छा, अब तुम सब इस कविता को एक बार फिर से पढ़कर देखो कि तुमने जो-जो बातें बताई हैं, उनमें से कौन-कौन-सी बातें ये कविता भी कह रही है।"

(इसके बाद सभी ने एक बार फिर से कविता को पढ़ा और अपनी-अपनी बात के लिए कहा कि ये बात मैंने बताई थी जो इसमें है, जैसे— रोज़गार, चिकित्सा, स्टेशन, बस, आदि)।

फिर एक बात और मेरे द्वारा जोड़ी गई कि इसमें परिवार के विषय में भी बताया गया है— एकल और संयुक्त परिवार। क्या तुम इस बारे में जानते हो? इस सवाल पर भी चर्चा हुई। कविता की पंक्ति "सुरसतिया के दोनों बेटे सूरत गए कमाने को" के ज़रिए सरस्वती नामक महिला के अकेलेपन और एकल परिवार पर चर्चा की गई। गाँव में दादा-ताऊ-चाचा आदि के एक साथ, एक जगह रहने और एक साथ खाना बनने की बात से संयुक्त परिवार को समझाया गया। इस तरह, यहाँ सामाजिक विषय के प्रकरण पर सामान्य बातचीत करके उन्हें पुस्तकालय अथवा



सामाजिक विज्ञान विषय की कक्षा में सवालों के ज़रिए समझ बढ़ाने को कहा गया।

अकसर कविता गायन के ख़त्म होने के साथ ही बच्चों की परस्पर बातचीत का सिलसिला कुछ इस तरह शुरू होता था, "दीदी, कविता बहुत अच्छी है"... कहकर कुछ बच्चे कविता के अच्छे होने का कारण बताते तो कुछ कविता की पंक्तियाँ दोहराते। यह दोहरान कविता के भावार्थ

को समझने, सन्दर्भ को अनुमान से जानने और तर्क को, मुहावरे को समझने के पर्याप्त अवसर देता है। यहाँ तक कि कई बच्चों ने तो कविता में निहित तुलनात्मक बिन्दुओं को पकड़ा भी और उनका विश्लेषण भी किया।

अब मैं रोज़ नई कविताएँ खोजने और ख़ुद उनका राग बनाने में समय लगाने लगी, ताकि अगले दिन नई धुन और लय-ताल के साथ उनको कक्षा-कक्ष की गतिविधि का हिस्सा बना सकूँ और उसका भरपूर आनन्द ले व दे सकूँ। एक और कविता जो कक्षा में की गई वह थी, 'गिलहरी का घर', और इस कविता पर गतिविधि थी, कविता को समझकर उससे कहानी बनाना। अब हर बच्चा अपनी स्मृति के आधार पर कहानी बनाता और उससे भी पहले ध्यान से सुनने को आतुर रहता। काम करते-करते बच्चे कहने लगे, "हम गिलहरी का घर बनाकर लाएँगे।" उन्होंने कक्षा की दीवार पर एक पेड़ बनाकर लगाया, उसके पास गिलहरी, ख़रगोश, चिड़िया, बन्दर आदि जानवर भी लगा दिए और उसको नाम दिया 'कविता पेड़'। रिंकू तो गिलहरी के लिए बिस्तर भी बनाकर लाई। कक्षा में किसी से कुछ करने को अलग से नहीं कहा गया था, पर अब वे ख़ुद ही उत्साहित हो रहे थे। यह उन्हें सृजनात्मकता और रचनात्मकता की ओर उन्मुख कर रहा था। जैसे ही कविता 'वन-श्री' का वाचन करवाया गया, उन्होंने कहा, "अब हम इस पेड़ के पास एक गाय और लगाएँगे।" एक छात्रा तो बया का घोंसला रँगकर भी ले आई और 'कविता पेड़' के पास लगाया। पूछने पर उसने बताया, "वन में तो पेड़ पर घोंसले भी होते हैं, इसलिए मैं ये बनाकर लाई हूँ।" बच्चों के इस क्रियाकलाप से एक नया विचार उत्पन्न हुआ। बच्चों से कविताएँ छाँटकर लाने को कहा गया और एक दिन कक्षा की दीवारों पर विभिन्न कविताएँ लगाने के लिए चार्ट पेपर वर्क करवाया गया। इस काम से अगले दिनों के लिए कुछ नई सन्दर्भ सामग्री भी तैयार हो सकी। कक्षा 6 में कविता शिक्षण के कार्य से प्रेरित होकर अन्य कक्षाएँ भी कविता सुनाने की माँग करने लगीं। जब कविता शिक्षण प्रक्रिया चल रही थी, तब हमारी कक्षा सभी के लिए आकर्षण का केन्द्र बनी हुई थी। दूसरी कक्षाओं के बच्चे, जो पानी पीने के लिए अपनी कक्षा से बाहर आते, कक्षा के दरवाज़े के बाहर खड़े होकर तब तक कविता का आनन्द लेते रहते थे जब तक कि उन्हें इशारे से अपनी कक्षा में जाने को नहीं कह दिया जाता। स्कूल की दीदी (जो खाना बनाने का काम करती हैं) कक्षा के बाहर से मुस्कुराते हुए गुज़रतीं। यहाँ तक कि सामाजिक विज्ञान के शिक्षक भी कविता का आनन्द लेने कक्षा में आते और स्कूल की बैठकों में इस प्रक्रिया से बच्चों के सीखने की प्रशंसा करते।

कविता शिक्षण के इस क्रम में अगली कविता थी, 'पंपापुर जाना है हमको'। इस कविता में 'पंपापुर' बच्चों की रंग-रंगीली दुनिया है जहाँ सर्कस, खेल-तमाशे, कहानी, कविता और मस्ती की दुनिया है। सबके साथ मिलकर, नाच-कूदकर कविता को गाया गया। उस समय कक्षा में बच्चों का आनन्द देखने लायक़ था, जिसे शब्दों में बयाँ करना मुश्किल होगा। उनके चेहरे की मुस्कुराहट और देर तक गूँजने वाले कविता के स्वर इस बात की पुष्टि करते थे कि वे कविता के भावों को समझने और उसमें डूबने लगे हैं। इस कविता को उन्होंने स्वयं से तैयार करके सुबह की बाल सभा में आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुत किया। इसी तरह की कुछ कविताओं को कक्षा में सभी ने खड़े होकर हाव-भाव के साथ गाया भी। कक्षा में जब कविता ख़त्म हो गई तो कुछ सवाल-जवाब इस क्रम में रहे :

मनीष (उत्साहित होकर) : "दीदी, पंपापुर कहाँ है?"

दीदी : "क्यों? तुमको वहाँ जाना है क्या?"

मनीष : "हाँ दीदी, मुझे वहाँ सर्कस, झूले और रंग-बिरंगी दुनिया को देखना है।"

दीदी : "अच्छा चलो, एक बात बताओ! वहाँ क्या-क्या है, तुमने कैसे जाना?"

मनीष : "दीदी, इसमें आया है न! वहाँ ख़ूब रंग-बिरंगी दुनिया है। वहाँ गुड़िया है, गुड्डा है, खेल-खिलौने हैं। कहानियाँ सुनने को मिलती हैं और सर्कस भी दिखाते हैं। पंपापुर बच्चों की दुनिया है।"

दीदी : "इसका मतलब तो तुम घूम आए हो।"

मनीष : "नहीं तो दीदी!"

दीदी : "कविता में जिन बातों को बताया गया है, उनसे तो आपको सब चीज़ों का अनुमान लग रहा है। है न?"

सभी : "हाँ, हाँ!"

चर्चा आगे बढ़ाते हुए मैंने बच्चों से कहा कि इस तरह से हम कविता की सभी बातों की कल्पना कर रहे हैं और समझ रहे हैं कि पंपापुर किस तरह की दुनिया है।

इस तरह बच्चों को कल्पना करने और अनुमान लगाने का अभ्यास हो रहा था। अब बच्चों को कहा गया कि इस कविता पर अपने विचार लिखो कि तुमको क्या-क्या समझ आ रहा है। इस तरह लेखन का अभ्यास करवाया गया। अगला काम 'एक अनोखी दुनिया' नाम से कहानी या निबन्ध लिखवाने का रहा, जिसे सभी ने अपनी-अपनी कल्पना के आधार पर लिखा। हालाँकि, मनीष के इस प्रश्न का जवाब तो मेरे पास नहीं था कि "पंपापुर कहाँ है?", पर इतनी सन्तुष्टि मिल रही थी कि कविता ने बच्चों के मन को छू लिया है और शायद अब वे कविताओं को पढ़ना और उनका आनन्द लेना भी सीख चुके हैं। इसी प्रक्रिया में भाषा शिक्षण के वे कई उद्देश्य पूरे हो रहे थे, जिनका ज़िक्र मैंने ऊपर किया है।

उच्च प्राथमिक कक्षाओं को पढ़ाते-पढ़ाते मैं इतनी अभ्यस्त हो गई थी कि कविता के आनन्द को बच्चों तक पहुँचाने के अन्दाज़ और आनन्द के तरीक़ों को भूल ही गई थी। जब बच्चों के साथ कविता गायन किया और उनके चेहरे के भावों व ख़ुशी को देखा तो मैंने सीखा कि गतिविधियों में प्राथमिक-उच्च प्राथमिक स्तर पर अन्तर तो हो सकता है, पर कविता का आनन्द लेने का तरीक़ा कविता में डूबने से ही मिलता है। साथ ही इसमें मानसिक क्रिया के साथ-साथ शारीरिक क्रियाकलापों का होना भी नितान्त अनिवार्य है। यह काम करते हुए मैंने सीखा कि कविता से सृजन की तरफ़ कैसे बढ़ें और कला व सामाजिक विज्ञान को भाषा शिक्षण से कैसे जोड़ें। कविता शिक्षण से दूसरी विधाओं को सिखाना भी आसान-सा लगा। यहाँ एक शिक्षक की भूमिका में होने से मेरी समझ का स्तर तो व्यापक हुआ ही, दूसरे विषय भी शिक्षण में स्वतः शामिल हो गए। मसलन, संगीत शिक्षक ने अच्छी धुन बनाने में मेरी मदद की, संगीत की कक्षा में कविता का अभ्यास करवाकर बच्चों का मनोबल बढ़ाया, जिससे सभी बच्चे सुबह की सभा में अपनी प्रस्तुति दे सके। इस कक्षा से बच्चों को अपनी दुनिया में रंग भरने के साथ-साथ चित्रकारी करने, कुछ नया गढ़ने, बातचीत करने, प्रश्न खड़े करने, सोचने, सृजन करने, आदि के मौक़े मिले और साथ ही भावात्मक रूप से वे शिक्षक के और नज़दीक आए। कविता शिक्षण के इस अनुभव से मुझे महसूस हुआ कि इस तरह के सीखने-सिखाने से व्यवहारिक बदलाव लाने, भावनात्मक सुदृढ़ता और तार्किक क्षमता को बढ़ाने के रास्ते भी खुलते हैं और बच्चों में सोचने व चिन्तन करने की क्षमता का विकास भी होता है।

प्रतिभा शर्मा शिक्षा के क्षेत्र में 15 वर्ष से काम कर रही हैं। आपने मानस गंगा सीनियर सेकेंडरी स्कूल (बोध शिक्षा समिति, कूकस) में 6 वर्ष तक कार्य किया। केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (नई दिल्ली) जयपुर परिसर से संस्कृत भाषा में पीएचडी तथा बीएड की शिक्षा प्राप्त की। 2017 से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, टोंक से जुड़ी हैं। संस्कृत विषय पर आपके लिखे कई लेख संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं में छप चुके हैं। शिक्षा सम्बन्धी लेख 'टीचर्स ऑफ़ इंडिया पोर्टल' पर भी प्रकाशित हुए हैं। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी स्कूल टोंक, राजस्थान में शिक्षण कार्य कर रही हैं।

सम्पर्क : pratibha.sharma@azimpremjifoundation.org